Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
March 2024 5(3), 1783–1788

VARIOUS DIMENSIONS OF LABOUR AND FARMER LIFE IN CONTEMPORARY HINDI POETRY

समकालीन हिंदी कविता में मज़दूर एवं किसान जीवन के विविध आयाम

Reena Ranga [1], Ajay Kumar Shukla [1]

[1] Research Scholar (Hindi), Kalinga University, Naya Raipur (CG), India
[2] Professor (Hindi), Kalinga University, Naya Raipur (CG), India

ABSTRACT

English: The foundation of social, cultural and political life of any country is its economic condition. Strong, well-planned and systematic economic development accelerates the social order and progress of the country. Today, just as the status of a person is judged by looking at his economic condition, similarly, on the international platform, the development status of a nation is estimated on the basis of its economic development. In our country, the farmers and the working class have a special role in taking the flow of development forward, but their condition is very pathetic today. In the present times, the policies of globalization and the looting tendency of the capitalist people have exploited the lower class a lot. After independence, many laws were made to stop the exploitation of farmers and workers and to give them economic strength, but due to capitalist influence and government weakness, their exploitation continues even today. According to Dr. Shivkumar Sharma, there are only two castes in this world - the exploiter and the exploited. The exploiting class traders, landlords, industrialists are trying to maintain the capitalist system in the name of destiny and as long as this capitalist system remains, the end of exploitation is impossible.

Hindi: किसी भी देश के सामाजिक,सांस्कृतिक,राजनीतिक जीवन की आधारशिला आर्थिक स्थिति होती है। सुदृढ़, सुनियोजित,योजनाबद्ध आर्थिक विकास देश की सामाजिक व्यवस्था तथा प्रगतिशीलता को गति प्रदान करता है। आज जिस प्रकार किसी व्यक्ति की हैसियत का निर्णय उसकी आर्थिक स्थिति को देखकर किया जाता है,उसी प्रकार अंतरराष्ट्रीय मंच पर किसी राष्ट्र के विकास की स्थिति का अनुमान उसके आर्थिक विकास के आधार पर लगाया जाता है। हमारे देश में विकास की धारा को आगे बढ़ाने में किसान एवं मज़दूर वर्ग का विशेष हाथ है,परंतु उनकी स्थिति आज बड़ी दयनीय है। वर्तमान समय में वैश्वीकरण की नीतियों एवं पूँजीवादी लोगों की लूट प्रवृत्ति ने निम्न वर्ग का खूब शोषण किया है। आज़ादी के पश्चात् किसानों एवं मजदूरों के शोषण को रोकने और उनका आर्थिक बल देने के लिए कई कानून बनाए गए,लेकिन पूँजीवादी प्रभाव और सरकारी दुर्बलता के चलते उनका शोषण आज भी जारी है। डॉ.शिवकुमार शर्मा के अनुसार इस संसार में केवल दो ही जातियाँ हैं- शोषक और शोषित। शोषक वर्ग व्यापारी,ज़मींदार,उद्योगपति प्रारब्ध के नाम पर पूँजीवादी व्यवस्था को बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील हैं और जब तक यह पूँजीवादी व्यवस्था बनी रहेगी तब तक शोषण का अंत असंभव है।
अंग्रेज़ी युग में व्याप्त पूँजीवादी व्यवस्था के कारण शोषण चक्र में किसान और मज़दूर निर्मम चक्की में पिसता रहा है। न तो किसान को उसकी फ़सल का उचित मूल्य मिलता है और न ही मज़दूर को उसके श्रम का उचित मेहनताना प्राप्त होता है। समकालीन हिंदी कवियों ने मज़दूर एवं किसानों के शोषण के विविध चित्र अंकित किए हैं।वे शोषण के खिलाफ़ आवाज़ बुलंद करते हुए उसके जीवन की अनेक समस्याओं एवं विसंगतियों को भी प्रस्तुत करते हैं।

Corresponding Author
Reena Ranga,
assistantresearch68@gmail.com

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i3.2024.5510

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

1. प्रस्तावना

किसी भी देश के सामाजिक,सांस्कृतिक,राजनीतिक जीवन की आधारशिला आर्थिक स्थिति होती है। सुदृढ़, सुनियोजित,योजनाबद्ध आर्थिक विकास देश की सामाजिक व्यवस्था तथा प्रगतिशीलता को गति प्रदान करता है। आज जिस प्रकार किसी व्यक्ति की हैसियत का निर्णय उसकी आर्थिक स्थिति को देखकर किया जाता है,उसी प्रकार अंतरराष्ट्रीय मंच पर किसी राष्ट्र के विकास की स्थिति का अनुमान उसके आर्थिक विकास के आधार पर लगाया जाता है। हमारे देश में विकास की धारा को आगे बढ़ाने में किसान एवं मज़दूर वर्ग का विशेष हाथ है,परंतु उनकी स्थिति आज बड़ी दयनीय है। वर्तमान समय में वैश्वीकरण की नीतियों एवं पूँजीवादी लोगों की लूट प्रवृत्ति ने निम्न वर्ग का खूब शोषण किया है। आज़ादी के पश्चात् किसानों एवं मजदूरों के शोषण को रोकने और उनका आर्थिक बल देने के लिए कई कानून बनाए गए,लेकिन पूँजीवादी प्रभाव और सरकारी दुर्बलता के चलते उनका शोषण आज भी जारी है। डॉ.शिवकुमार शर्मा के अनुसार इस संसार में केवल दो ही जातियाँ हैं- शोषक और शोषित। शोषक वर्ग व्यापारी,ज़मींदार,उद्योगपति प्रारब्ध के नाम पर पूँजीवादी व्यवस्था को बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील हैं और जब तक यह पूँजीवादी व्यवस्था बनी रहेगी तब तक शोषण का अंत असंभव है।

अंग्रेज़ी युग में व्याप्त पूँजीवादी व्यवस्था के कारण शोषण चक्र में किसान और मज़दूर निर्मम चक्की में पिसता रहा है। न तो किसान को उसकी फ़सल का उचित मूल्य मिलता है और न ही मज़दूर को उसके श्रम का उचित मेहनताना प्राप्त होता है। समकालीन हिंदी कवियों ने मज़दूर एवं किसानों के शोषण के विविध चित्र अंकित किए हैं।वे शोषण के खिलाफ़ आवाज़ बुलंद करते हुए उसके जीवन की अनेक समस्याओं एवं विसंगतियों को भी प्रस्तुत करते हैं।

मशीनी तंत्र में मज़दूर बेकार हो गया है। आज घर-घर में मशीनें आने से बेरोज़गारी बढ़ी है। भौतिकवादी जीवन को मशीनों ने लील लिया है। आज मज़दूर वर्ग को न तो कोई काम मिल रहा है और न ही उसकी पूरी मज़दूरी। मशीन व्यक्ति से ज्यादा काम करती है,इससे मज़दूरों की व्यथा निरंतर बढ़ती जा रही है। रमण कुमार सिंह ने अपनी कविता में मज़दूर वर्ग का यथार्थ चित्रण करते हुए लिखा है-

"आदमी ने विज्ञान की बाहें थाम
बनाई कई-कई मशीनें
घर-घर पसरती चली गई मशीनें
मशीनों से ही होने लगा हर काम
आदमी बन गया मशीन
आदमी कहलाने लगा सफल
और उसकी आँखों से झरने लगे
आँसू टप-टप...।"1

वर्तमान समय में मज़दूर का जीवन असुरक्षित दिखाई देता है। आज कोई मज़दूर जब मज़दूरी करने घर से निकलता है तो यह निश्चित नहीं होता कि वह शाम को घर लौटेगा या नहीं। वह ऐसे पूँजीपति वर्ग के पास मज़दूरी करने जाता है, जो सब कुछ लूट लेना चाहता है। वह मज़दूर को उसकी पूरी मज़दूरी नहीं देना चाहता। मज़दूर को पूँजीपति की गुलामी भी करनी पड़ती है। कवि बद्रीनारायण की कविता में मज़दूर के दर्द का रेखांकन हुआ है। पत्नी अपने मज़दूर पति से पूछती है कि तुम्हारी ऐसी क्या मज़बूरी है, जो तुम शोषण करने वाले के पास ही मज़दूरी करने को विवश हो-

काली काली रात और होती जा रही है भयावनी
रात गुलामी की और मृत्यु की रात
रात गिद्धों की और काले नागों की रात
तुम तो गए हो पिया,हत्यारों के सरदार के यहाँ मज़दूरी करने
यह कैसी तेरी मजबूरी है।" 2

श्रमिक ही देश का निर्माण करते हैं। वे अपने श्रम का पूरा मूल्य नहीं पाते हैं। उच्च वर्ग एवं पूँजीपति वर्ग निरंतर उसका शोषण करता रहता है। भारतीय श्रमिक स्त्री केवल मिट्टी का श्रृंगार करती है। दलित स्त्री की स्थिति श्रमिक के रूप में तो और भी बुरी है। वह महाजनों ज़मीदारों,ठाकुरों और ठेकेदारों के पास मज़दूरी करने के लिए विवश है। उसे मज़दूरी भी इतनी कम दी जाती है कि उससे परिवार का भरण-पोषण नहीं हो सकता। उसका सारा शरीर पत्थर का हो चुका है। रघुनाथ व्यास की कविता में बेबस मज़दूरनी की व्यथा का विवेचन इस प्रकार हुआ है-

"रोटी की उलझन में उलझे,कैसे सगुन किनारे
हाथ हथौड़ा लेकर पत्थर तोड़े सड़क किनारे
माटी का सिंदूर हमारा माटी का श्रृंगार
चूड़ी कैसे पहनूँ रे

जब भी आवे तीर चुभावे
ज़ालिम ठेकेदार।"3

कवि मदन कश्यप ने समाज और सरकार से मजदूरों की स्थिति को लेकर सीधा-सीधा सवाल किया है।कवि पूछते हैं कि हमारे देश में मेहनत का मूल्य इतना काम क्यों है? मज़दूरों की स्थिति इतनी दयनीय क्यों है? आज का श्रमिक शोषक वर्ग के आगे नतमस्तक क्यों हो चुका है? मेहनत करके भी श्रमिक अपनी समस्याओं से मुक्त नहीं हो पा रहा है। उसका शोषण निरंतर जारी क्यों है-

"कामगारों में
गम क्यूँ है
श्रम की कीमत
कम क्यूँ है
अत्याचारी के आगे
झुका हुआ
परचम क्यूँ है।" 4

अशोक वाजपेयी जी अपनी कविता में आज के मज़दूर की दयनीय स्थिति को देखकर उसका स्तुति गान करते हैं। उसकी नजरों में जो समाज को पूरी तरह से संचालित करता है,वह श्रमिक है। हमें प्रत्येक मज़दूर के लिए आवश्यक प्रार्थना करनी चाहिए और उनके श्रम का पूरा मूल्य भी प्रदान करना चाहिए। समाज को ऐसे लोगों का विशेष सम्मान करना चाहिए जो समाज के हक में निरंतर अपना पसीना बहा रहे हैं। कवि मज़दूर का स्तुति गान करते हुए लिखता है-

"मैं स्तुति करना चाहता हूँ
उसकी जो दीवारें पोतता है
और कड़ी धूप में इमारतों में लगाने के लिए ईंट सिर पर ढोता है;
उसकी जो देर रात गए सब्जियों की दुकान मोमबत्ती जलाकर खुली रखता है
और उसकी जो कहीं और जगह में जाकर फुटपाथ पर अख़बार बेचकर थककर
सो जाता है।"5

समकालीन कविता साधारण वर्ग से सीधी बातचीत करती है। वह यह भी कहती है कि श्रमिक वर्ग बिना किसी लाग-लपेट के अपना जीवन गुजारता है। वह विश्वास एवं ईमानदारी के साथ काम करता है। धनाड्य वर्ग उसे बेईमानी एवं धोखे से ठगता रहता है। जब अफ़सर और उच्च वर्ग के लोग शयन कक्ष में आराम कर रहे होते हैं,तब मज़दूर ही अपने पसीने से देश का श्रंगार कर रहे होते हैं। कवि अनिल कुमार सिंह को मेहनत करने वाले मज़दूर का पसीना मोती की तरह दिखाई देता है-

"इस अनंत ब्रह्मांड में
प्रवाल द्वीपों से उगे हैं ये झुर्रियाए चेहरे
इनकी अपनी क्रीड़ाएँ हैं
अपने खेत जिनमें
इनका पौरुष श्रम में ढलता है
सूर्य कहीं भी हो/सर्वप्रथम
इनकी श्वेद बूँदों में ही चमकता है की।"6

हमारा देश एक कृषि प्रधान देश है। देशकी अधिकांश जनता कृषि पर आधारित है। वैश्वीकरण एवं भूमंडलीकरण ने भारतीय कृषक वर्ग को बड़ी क्षति पहुँचायी है। किसानों से कम मूल्य पर फ़सल खरीद कर उद्योगपति बाज़ार में ऊँचे दामों पर बेच रहे हैं। आज किसानों की जमीनों पर उच्च वर्ग कालोनियाँ स्थापित कर रहा है। उद्योगपतियों ने किसानों की जमीनों पर शुगर मिल,कपड़ा उद्योग,खाद-कारखाना,बीज उत्पादन आदि से जुड़ी मशीनें लगाकर अकूत संपदा कमायी है।किसानों की ज़मीनों पर कब्ज़ा करके उद्योगपति किसानों को उजाड़ रहे हैं। समकालीन कविता में किसान और उसकी किसी का चित्रण पूँजीवादी वर्ग के संदर्भ में किया गया है। आर्थिक उदारीकरण के नाम पर किसानों एवं खेती को बर्बाद किया जा रहा है। आज का किसानभूखों मरने की कगार पर है।अन्नदाता को हमारे देश में किसी प्रकार का सम्मान नहीं दिया जाता। समाज एवं सरकार की दृष्टि में उन्हें कोई सम्मान प्राप्त नहीं है। वर्तमान समय में खेत बंजर बनते जा रहे हैं और किसान मज़दूर बनते जा रहे हैं। मुन्ना शाह की कविता 'खेत का मज़दूर' किसान वर्ग का अंकन बड़ी मार्मिकता से करती है-

"पसीने से तर-बतर
कंधे पर कुदाल
सफेद चमकता भाल
ज़मीन है तो किसान
नहीं तो मज़दूर
ना खेत अपना ना अन्न
केवल शरीर और श्रम
उपजाएँ फ़सल हम
हम ही भूखे
हर रोज़ भोजन रूखे-सूखे
मिट्टी छूने से
मैले हो जाते जिनके हाथ
क्या यही है किसान?" 7

किसान जीवन की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि वह दूसरों के लिए उन आकार उनका पेट भरता है,परंतु खुद को दो जून का भरपेट भोजन नहीं मिलता। वह आर्थिक अभाव में ही जीवन व्यतीत करता है। जिस युवा का पिता मर जाए और वह अपने बेटे के लिए केवल बंजर ज़मीन छोड़कर जाए,उस घर की स्थिति बड़ी दयनीय होती है-

"जब बाप मरा तब यह पाया
भूखे किसान के बेटे ने
घर मलबा टूटी खटिया
कुछ हाथ भूमि वह भी परती।" 8

हमारे यहाँ किसान प्रकृति की सबसे ज्यादा मार सहन करता है। बारिश न होने के कारण उसके खेत परती रह जाते हैं। वह बंजर और सूखे खेतों में हल चलाकर कुछ भी उत्पन्न नहीं कर सकता। खेती पर आधारित जीवन की विडंबना का विश्लेषण निर्मला पुतुल की कविता 'ढेपचा के बाबू' कविता में इस प्रकार हुआ है-

"खेती-बाड़ी का हाल बड़ा बेहाल है
दो साल से खेत परती हैं
ढेपचा या तो जहाँ तक हो सकता था, करता था
अब तो वह भी नहीं है
और हम तो हल चला भी नहीं सकते न।"9

देश की अनेक नदियाँ भी बाढ़ की शक्ल में किसानों की खेती को नष्ट करती रहती है। किसान अपनी मेहनत से खेत को हरा-भरा करता है, परंतु बाढ़ का पानी आ जाने से सारी फ़सल चौपट हो जाती है। खेत में अनावश्यक मिट्टी भर जाती है। ऐसे में किसान की कमर टूट जाती है। वह किसी से मुँह मोड़ने लगता है। आज के युग में युवा वर्ग इसी कारण खेती नहीं करना चाहता। 'कोसी' कविता में मदन वात्स्यायन लिखते हैं-

"लप-लप करती जीभ तरंगायित-तन-अजगर,
लोट कलेजों पर हम सबके खेत गयी भर।
खेत भर गयी, खेत चर गयी, रेत भर गयी
तेरी गँदली बाढ़ सिंधु को रेत कर गयी।"10

सरकार की नीतियों के कारण भारतीय किसान आत्महत्या करने को मज़बूर हैं। किसानों की पीड़ा सुनने के लिए सरकार तैयार नहीं है। नेतागण केवल चुनाव में ही किसानों को झूठा आश्वासन देते हैं। किसान खेतों में कुछ नहोने और कर्ज़ की समस्या के कारण आत्महत्या करते हैं। उनकी आत्महत्या अख़बार की केवल एक साधारण-सी ख़बर बनकर रह जाती है। कवि वसंत त्रिपाठी ने किसान की पीड़ा का रेखांकन करते हुए लिखा है-

"अख़बार में अपना कोना बचाती
किसानों की आत्महत्या की खबर

टेलीप्रिंटरों की खट-खट के बीच
सिर्फ़ एक ख़बर है
जिसे आँकड़े की तरह पढ़ता है
गृहमंत्री
संसद में शून्य काल के दौरान।"11

किसान वर्ग हमेशा ही बेगारी,कर्ज़,सूद,चंदा,लगान ब्याज एवं धर्म के आडंबरों में फँसा रहता है। उसका सारा धन उच्च वर्ग लूट लेता है। किसान भाग्य के भरोसे बैठा रहता है। छोटे किसानों को पूँजीवादी व्यवस्था की मार ज्यादा सहन करनी पड़ती है। भगवान गव्हाड़े की कविता 'होरी की याद में' किसान जीवन के विविध आयामों को प्रस्तुत किया गया है-

"होरी अच्छा किया तुमने जो
मूँद ली समय से पहले अपनी आँखें
देख सह नहीं पाते अपने किसान भाइयों की
दयनीय स्थिति...
पता है होरी?
कर्ज़ माफ़ी मिलती है बड़े ज़मींदारों को
ताक पर रख दिया जाता है
अपना भू-धारक गरीब किसानों को...
बीज खाद-बिजली पानी हो गयी है अबकी
महँगी और अनमोल
नोन-तेल लकड़ी की जरूरत में
जीवन हो गया है मिट्टी मोल।" 12

किसान वर्ग को आज अपनी फ़सल की उचित कीमत नहीं मिल पा रही है। वह बाज़ारवादी वर्ग के हाथों के कठपुतली बन चुकी है। उसकी फ़सल अब व्यापारी वर्ग कौड़ियों में खरीद कर महँगे दामों में बेचता है तो वह क्षोभ से भर जाता है-

"धर कर हल, बैलों को बाँध किसान
बैठ रहा पेट पर सत्तू सान
आँख देखती मेहनत का फल तिक्त
पेट बिसूरे रहा आज भी रिक्त।"13

निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि हिंदी समकालीन कविता में किसानों एवं मजदूरों की आर्थिक सामाजिक स्थिति का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत हुआ है। आज के युग में मशीनी कार्य होने से किसान एवं मज़दूर वर्ग का मूल्य घट गया है। मजदूरों को जहाँ काम नहीं मिल पा रहा, वहीं किसान-जीवन प्राकृतिक आपदाओं,फ़सलों की कम कीमत,कर्ज़ आदि से परेशान है। मज़दूर की मज़दूरी प्रतिदिन घटती जा रही है। पूँजीवादी वर्ग दोनों का शोषण लगातार कर रहा है। आज सरकार को किसानों की बढ़ती आत्महत्या को रोकने के लिए उचित कदम उठाने चाहिए। उनके जीवन में सुधार लाने का एक प्रयास करना चाहिए। हिंदी कविता ने दोनों वर्गों के विविध आयामों का रेखांकन कर उनके शोषण,अत्याचार,गरीबी,महँगाई,बेकारी भुखमरी आदि का सटीक विश्लेषण किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

बाघ दुहने का कौशल- रमण कुमार सिंह, राजकमल प्रकाशन,प्रा.लिमिटेड,नई दिल्ली, 2022,पृ.21 2.खुदाई में हिंसा-बद्रीनारायण,राजकमल प्रकाशन,प्रा.लिमिटेड,नई दिल्ली,2010,पृ.68
दर्द के दस्तावेज़-डॉ.एन.सिंह,श्री नटराज प्रकाशन,दिल्ली,2023,पृ.21
कुरुज- मदन कश्यप,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,2006,पृ.63
दुख चिट्ठी रसा है-अशोक वाजपेयी,राजकमल प्रकाशन,प्रा.लिमिटेड,नई दिल्ली,2019,पृ.68
पहला उपदेश- अनिल कुमार सिंह,राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली,2001,पृ.26
वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में समकालीन कविता- ऐडा मानुवेल,विद्या प्रकाशन कानपुर,2019 पृ.35

कहे केदार खरी-खरी- डॉ.अशोक त्रिपाठी, साहित्य भंडार,इलाहाबाद,2009,पृ.50
नगाड़े की तरह बजते शब्द- निर्मला पुतुल,भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2012,पृ.44
शुक्रतारा- मदन वात्स्यायन, वाणी प्रकाशन ग्रुप, नई दिल्ली,2006,पृ.116
सहसा कुछ नहीं होता- वसंत त्रिपाठी,भारतीय ज्ञानपीठ,नई दिल्ली,2004,पृ.69
आदिवासी मोर्चा-भगवान गव्हाड़े, वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली,2014,पृ.33
शुक्रतारा- मदन वात्स्यायन, वाणी प्रकाशन ग्रुप, नई दिल्ली,2006,पृ. 67